संस्कारों की आधार भूमि में राष्ट्रीय उन्नति

योगेंद्र नाथ शर्मा

इधर कुछ दिनों से एक ही प्रश्न उलझा हुआ है कि जवाहरलाल नेहरू विवि, जामिया मिल्लिया विवि और देश के कुछ अन्य विवि घोर असंतोष और अराजकता के केंद्र क्यों बन गए हैं यह प्रश्न सभी के हृदयों को बेचैन कर रहा होगा। इसी बीच एक पुस्तक में बहुत प्रेरक और ज्ञान पूर्ण बोधकथा पढ़ने को मिली, जिसमें इस प्रश्न का उत्तर भी छिपा हुआ था।

बोध कथा यूं है–'एक देश का राजा विलासी था, उसके मंत्री चालाक और चाटुकार थे। मंत्रियों ने राज्य का खूब शोषण किया, राजकोष खाली हो गया। अब खर्च घटाना था तो राजा से मंत्री बोले–'खर्च कहां घटायें, अपनी जो आदत है विलास की, वह तो बदलेगी नहीं, सेना पर खर्च घटेगा तो राज्य कमजोर हो जायेगा।' राजा ने कहा कि क्या करें तो मंत्री बोले– 'आश्रमों और गुरुकुलों का खर्च फालतू है, इसे बन्द किया जा सकता है। वैसे भी ज्ञान तो छिद्रान्वेषी और आलोचक ही होता है। जब तक राज्य में मेधावी रहेंगे, तब तक राज्य की आलोचना भी होती रहेगी, इससे हमारी आलोचना भी बन्द हो जायेगी।' बस राज्य के आश्रमों और गुरुकुलों की वृत्ति बन्द कर दी गयी।

कुलपति थे आचार्य यज्ञव्रत। वे चिन्तित हुए और राजा के पास गये। मंत्री बोला– आप राजकीय वृत्ति को किस प्रकार खर्च करते हैं कुलपति बोले– 'ब्रह्मचारी और ऋषियों के भोजन-वस्त्र, दुग्ध, ग्रन्थ लेखन और उपकरण आदि में।' मंत्री ने कहा– 'ब्रह्मचारी और ऋषियों को दूध जैसी विलास की वस्तु क्यों ग्रन्थ-लेखन क्यों उन्हें रट लो! मुट्ठीभर अन्न तो आपको गृहस्थों से मिल ही जायेगा।'

कुलपति खाली हाथ लौट आए, पर आश्रम में आकर उन्होंने कहा कि आश्रमों में देश की संस्कृति और प्रज्ञा को प्राण मिलते हैं, हम निर्णय करते हैं कि हम गृहस्थों के घर जा-जाकर भिक्षा लाएंगे और यह आश्रम चलायेंगे। ज्ञान की ज्योति को मन्द नहीं होने देंगे।' जन सहयोग से आश्रम तो चलते रहे, किन्तु राजा के आदेश की जनता में आलोचना होने लगी। राजा ने घबरा कर आदेश दिया कि आश्रमों में तो निन्दक और बगावती पलने लगे हैं, इसलिये अगर कोई गृहस्थ आश्रमों को वृत्ति देगा तो वह भी राजविद्रोही माना जायेगा और उसको दंड मिलेगा। अब नया संकट था आश्रम के अस्तित्व का। कुलपति ने ब्रह्मचारियों से कहा कि आप लोग अपने घर से भोजन का प्रबंध कर लें और आचार्य लोग अपने परिवार को पत्नियों के पितृगृह भेज दें, आश्रमों में ज्ञान की ज्योति मन्द न पड़े।

मंत्री रथ पर बैठकर भ्रमण कर रहा था, उसने देखा कि आश्रम तो अभी भी चल रहा है। ज्ञान की ज्योति जग रही है और राज्य में राजा की निन्दा और अधिक बढ़ गयी है। मंत्री ने कुटिल नीति से काम लिया। वह आश्रम में पंहुचा और बोला– 'कुलपति से बात करना चाहता हूं।' मंत्री ने एकान्त मांगा तो कुलपति ने कहा कि यह आश्रम है, यहां जो कहना है, सबके सामने ही कह दें। जब मंत्री की दुविधा देखी तो कुलपति के पास बैठे आचार्यजन स्वयं ही बाहर चले गये। मंत्री ने कुलपति के कान में कहा कि सबके सामने आपकी प्रशंसा मैं कैसे करता और बिना कुछ बात किए ही चला गया।

आचार्यजन को कुलपति ने जो बात थी, वह बतला दी, किन्तु अन्य आचार्य ने सोचा कि जरूर कुलपति जी मिथ्या बोल रहे हैं, इस बात के लिये भला एकान्त की क्या जरूरत होगी जरूर मंत्री ने कोई विशेष-वृत्ति कुलपति को देने का वादा किया है। संदेह बढ़ गया और आश्रम का वातावरण बदल गया। मंत्री संदेह का बीज बो गया। अब कुलपति और आचार्य आपस में ही एक-दूसरे की निन्दा करने लगे। आचार्य लोग कृपा दृष्टि पाने के लिये राज्य के अधिकारियों के दरवाजे पर जाने लगे। ज्ञान की ज्योति मन्द पड़ गयी थी। आश्रम और गुरुकुल बन्द हो चुके थे।

क्या आज यही स्थिति नहीं हो गई है शिक्षा और ज्ञान की ज्योति को बन्द करके पूरे समाज में संदेश और असंतोष का ज़हर भरने का प्रयास राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा है जय शंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में यही तो कहा है कि समाज में स्वार्थ और अराजकता बढ़ेगी तो सर्वत्र ही असंतोष बढ़ जाएगा–

'अपने में भर सब कुछ कैसे,
व्यक्ति विकास करेगा
यह एकांत स्वार्थ है भीषण,
अपना नाश करेगा।'

क्या केवल अपना विकास या अपने ही लोगों की तुष्टि लोकतंत्र का उद्देश्य है राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो 'साकेत' में भारत के संस्कारों को आधारभूमि मानते हुए स्पष्ट रूप से घोषणा की है–

'निज हेतु बरसता नहीं
व्योम से पानी।
हम हों समष्टि के लिए,
व्यष्टि बलिदानी।'

पूरे समाज के कल्याण के लिए ही हमें सर्वस्व बलिदान करने की सीख सदा दी जाती रही है। आज यह क्या हो गया है कि भारतीयता के इस महत्तर जीवन-मूल्य को भूल कर राजनीति के कर्णधार केवल और केवल स्वार्थों की पूर्ति को ही अपना सर्वोपरि लक्ष्य मान बैठे हैं

संपादकीय

समरसता के राम

केंद्र सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट बनाने की घोषणा के साथ ही राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो गया है। नौ नवंबर को देश की शीर्ष अदालत की पांच सदस्यीय बेंच ने सर्वसम्मति से विवादित जमीन पर रामलला का हक माना था। साथ ही मुस्लिम पक्ष को पांच एकड़ जमीन अयोध्या में उपलब्ध कराने को कहा था। अब केंद्र सरकार ने 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' नाम से ट्रस्ट बनाने की घोषणा के बाद इसके सदस्यों की घोषणा कर दी है। अभी इसमें उ.प्र. सरकार और केंद्र सरकार के प्रतिनिधि भी शामिल किये जाने हैं। निस्संदेह अब जब अयोध्या में राम मंदिर निर्माण की राह खुल गई है तो हम सबका दायित्व बनता है कि हमारा लक्ष्य भव्य राम मंदिर के निर्माण के साथ ही देश में अतीत की कटुता को दूर करने का हो। श्रीराम जिन जीवन मूल्यों के लिये जाने जाते हैं, उनका अनुसरण करके राष्ट्रीय एकता, अखंडता व समरसता का मार्ग प्रशस्त किया जाये। हमें नहीं भूलना चाहिए कि बीसवीं सदी से चले आ रहे विवाद ने देश के सामाजिक सद्भाव व सांप्रदायिक सौहार्द को भारी क्षति पहुंचायी है। छह दिसंबर 1992 को विवादित ढांचे को गिराये जाने और उसके बाद हुई घटनाओं को बिसार कर हमें 21वीं सदी के भारत को समृद्ध करना चाहिए। ट्रस्ट निर्माण के बाद सरकार की भूमिका को विराम दिया जाना चाहिए और ट्रस्ट को कोशिश करनी चाहिए कि मंदिर निर्माण की प्रक्रिया में राजनीतिक लाभ-हानि की बात न हो। मंदिर निर्माण को राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए। साथ ही पांच एकड़ पर बनने वाली मस्जिद के निर्माण में भी हमें सहयोग देना चाहिए ताकि पूरी दुनिया में संदेश जाये कि राम समरसता के प्रतीक हैं, संकुचित सरोकारों के नहीं। निस्संदेह, इस बात के लिये भारतीय जनमानस की मुक्तकंठ से सराहना की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के नौ नवंबर को सर्वसम्मति से दिये गये फैसले को पूरे देश ने शिरोधार्य किया। वह भी ऐसे वक्त में जब पूरी दुनिया की निगाह भारत की ओर लगी थी। आज ऐसे वक्त में जब राजनेताओं द्वारा कई मुद्दों को हवा देकर ध्रुवीकरण के प्रयास किये जा रहे हैं, ट्रस्ट की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। मंदिर आंदोलन के दौरान उपजी तमाम कटुताओं को बीते दिनों की बात मान लेना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने भी जब फैसला सुनाया था तो कहा था कि यह फैसला राष्ट्रहित में जीत-हार से परे है। बीसवीं सदी से चले आ रहे विवाद के पटाक्षेप के बाद जब अब मंदिर निर्माण ट्रस्ट अस्तित्व में आ गया तो उम्मीद की जानी चाहिए कि शीघ्र ही अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण शुरू होगा। तमाम बाधाएं दूर होने के साथ ही केंद्र द्वारा वर्ष 1993 में अधिगृहीत 67 एकड़ जमीन भी अब ट्रस्ट को हस्तांतरित कर दी गई है। ट्रस्टियों की घोषणा कर दी गई है। कुछ और मनोनयन आने वाले समय में किये जाएंगे। जैसे 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' ट्रस्ट में एक दलित प्रतिनिधि को स्थान मिला है, वैसे ही किसी महिला को भी प्रतिनिधित्व मिले तो बेहतर होगा। अभी भी कई साधु-संत ट्रस्ट में शामिल होने के लिये अपनी दावेदारी जता रहे हैं, ऐसे में मंदिर आंदोलन में निर्णायक भूमिका निभाने वाले संतों की अनदेखी भी नहीं की जानी चाहिए। सचमुच आज सद्भाव और समरसता का नया काव्य लिखा जा रहा है। अब हमें शांतिपूर्वक आगे की ओर बढ़ना है।

सू- दोकू क्र.034

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 33 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

समझ बढ़ाने से ही बचेगा पर्यावरण

राजीव मंडल

ऑस्ट्रेलिया के जंगलों और इससे पहले अमेजन के वर्षा वनों में में भयावह आग की घटना ने हर किसी को चिंता में डाल दिया है।

जलवायु परिवर्तन की गंभीर होती चुनौतियों के बीच दुनियाभर के तमाम जंगलों में आग लगने की घटनाएं भविष्य के लिए खतरनाक संकेत हैं। ऐसी घटनाओं से न केवल आदिवासियों की आजीविका पर संकट आता है बल्कि पारिस्थितिकी के लिए भी हालात बेहद दुरूह बनते हैं। 2019 के पहले आठ महीनों में दुनिया भर में जंगलों की आग के 1.6 करोड़ मामले सामने आए। इसमें हिमालय के जंगलों की आग भी शामिल है और अफ्रीका और अमेजन के वनों की राख भी। मगर बड़ा सवाल यही कि क्या हम ऐसी घटनाओं से लड़ने में सबल हो सके हैं

देखा जाए तो आग से वनों को बचाने की व्यवस्था पूरे देश में बहुत नाजुक स्थिति में है।

सन 2000 से लेकर अब तक भारत के पर्वतीय राज्य उत्तराखंड में 44,554 हेक्टेयर जंगल जल चुके हैं। आकार के हिसाब से देखा जाए तो फुटबॉल के 61,000 मैदान। और इससे जान-माल के अलावा बहुमूल्य जड़ी-बूटियों, पर्यावरण, उपजाऊ मिट्टी समेत और कई तरह का नुकसान उठाना पड़ा है। अगर भारत के संदर्भ में अमेजन और ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में आग लगने की घटनाओं को देखें तो एक सवाल बरबस कौंधता है कि क्या हम ऐसी डरावनी घटनाओं से निपटने के लिए तैयार हैं जंगल में आग लगने से निपटने के लिए कभी कोई गम्भीर प्रयास नहीं किया गया। आज भी वन विभाग, राष्ट्रीय दूरसंवेदन एजेंसी, भारतीय मौसम विभाग और भारतीय वन सर्वेक्षण संस्थान आदि संस्थाओं के बीच कोई तालमेल नहीं है।

वन विभाग के पास इस आग से निपटने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं है। इस नाते यथाशीघ्र राष्ट्रीय स्तर पर वनों में आग रोकने के लिए एक 'शोध संस्थान' की स्थापना की जाए। आग पर नियंत्रण के लिए कोई स्पष्ट योजना नहीं है और न ही इसकी जानकारी है। यहां तक कि जंगल की आग पर आंकड़े नाममात्र के उपलब्ध हैं। आग के मौसम की भविष्यवाणी करने की कोई व्यवस्था नहीं है। आग से खतरे का अनुमान, आग से बचाव और उसकी जानकारी के उपाय भी नहीं हैं। जबकि करीब 20-22 साल पहले खाद्य एवं कृषि संगठन के विशेषज्ञों के दल ने अपनी एक विस्तृत रिपोर्ट में भारत में जंगल की आग की स्थिति को बहुत गम्भीर बताया था।

रिपोर्ट में उस वक्त भारत में जंगल की आग की स्थिति बहुत चिंताजनक बताया गया था। यह भी बताया गया था कि आर्थिक और पारिस्थितिकी की दृष्टि से इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। आग पर नियंत्रण के लिए कोई स्पष्ट योजना नहीं है और न ही इसकी जानकारी है। भारत को एक पूरी आग-प्रबंध व्यवस्था की जरूरत है जो राज्यों में संस्थागत रूप में उपलब्ध हो। वहीं वर्ष 1995 में उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी भागों में लगी आग के बाद वन मंत्रालय द्वारा गठित आर.पी. खोसला समिति ने भी आग से बचाव के कई तरीके सुझाए थे। मगर अफसोस उस पर गंभीरता नहीं बरती गई। बात अगर अमेजन के वर्षा वनों में अगलगी की करें तो दुनिया को इस घटना से बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। वरना परिणाम भयावह होंगे। जंगल में आग लगने का सीधा और सरल अर्थ किसी के घर में आग लगने जैसा होता है। लिहाजा इस मुददे पर पुराने उपायों के साथ-साथ नये सुझाव मसलन ड्रोन तकनीक, उपग्रहों की मदद से जंगलों पर नजर रखना, एयरक्रॉफ्ट के साथ जमीन प्रबंधन की सुव्यवस्थित अध्ययन बेहद कारगर होगा। साथ ही वन क्षेत्र के लिए वित्तीय आवंटन बढ़ाया जाए। लोगों को जंगलों के साथ जोड़ा गया यानी लोगों को जंगल के प्रति जागरूक किया जाए। बिना जागरूकता के कुछ नहीं हो सकता।